

Nahr Ki Sadaaen (Hindi)

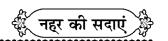
नहर की सदाएं



- रोज़ादार डाकू
- 7
- 🍑 बन्दूक़ की एक गोली..... 🗈
- 💌 इयादत के 31 म-दनी फूल 18

शैख़े त़रीकृत, अमीरे अहले सुन्तत, बानिये दा 'वते इस्लामी, हृज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह्ममद इल्यास अत्तार कादिरी २-ज्वी



ٱلْحَمْدُ يِلْهِ وَبِ الْعُلَمِينَ وَالصَّاوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّيدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّابَعُدُ فَأَعُودُ بَأَللَّهِ مِنَ السَّيْطِي الرَّجِيْمِ فِسُواللَّهِ الرَّحُمُ فِ الرَّحْبُومِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज् : शैखे त्रीकृत, अमीरे अहले सुन्तत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरते अल्लामा دَامَتْ وَ كَاتُهُمُ الْعَالَ विलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी المَثْ وَ كَاتُهُمُ الْعَالَ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ लीजिये اِنْ شَاءَاللَّهُ عَرْضً वो कुछ पढेंगे याद रहेगा। दुआ येह है:

> اَللّٰهُمَّافَتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَإِذْشُر عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْإِكْرَام

तरजमा : ऐ अख़्याह فَوْوَعَلُ हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाजिल फरमा ! ऐ अ-जमत और बुजुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٠ ٤ دارالفكر بيروت)

नोट: अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गमे मदीना व बकीअ व मग्फिरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नहर की सदाएं

येह रिसाला (नहर की सदाएं)

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हजरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज्वी ने **उर्द** जबान में तहरीर फरमाया है। وَمَتَّ كَاتُهُمُ الْعَالَةُ وَالْمُعَالِّةُ الْعَالَةُ الْعَالَةُ الْعَالَةُ وَالْعَالَةُ الْعَالَةُ وَالْعَالَةُ وَالْعَالِةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِةُ وَالْعَالِةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِةُ وَالْعَالِةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَلَاقُولُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَلِيةُ وَالْعَلِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَالِيةُ وَالْعَلِيقُولُولُولُهُ وَاللّهُ وَالْعَلِيقُولُ وَاللّهُ وَالْعَلِيقُولُ وَاللّهُ وَلَّهُ وَاللّهُ وَاللّ

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मल खत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब जरीअए मक्तब. ई-मेइल या SMS) मृत्तलअ फरमा कर सवाब कमाइये।

राबिता: मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409 E-mail: translationmaktabhind@dawateislami.net

ٱڵٚۘٛٚٚڡٙٮؙۮؙڽؚڐٚ؋ؚۯؾؚٵڵۼڵؠؽڹٙۅؘالصَّلوّةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ٱمَّابَعُدُ فَاعُودُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّجِيْمِ فِسُواللهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِبُمِ فِي

नहर की सदाएं

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (24 सफ़हात) मुकम्मलें पढ़ लीजिये وَالْمُوَالِمُ الْمُوَالِمُ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस फ़रमाएंगे ।

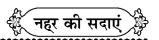
मोतियों का ताज

अल क़ौलुल बदीअ में है: इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सिय्यदुना अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मन्सूर مَنْ الْمُورُونَةُ को अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह सर पर मोतियों का ताज सजाए जन्नती लिबास में मल्बूस शीराज़ की जामेअ मिस्जिद की मेहराब में खड़े हैं, ख़्वाब देखने वाले ने अ़र्ज़ की: ﴿وَوَمَلُ اللّهِ مِكَ اللّهُ مِكَ اللّهُ مِكَ اللّهُ مِكَ اللّهُ مِكَ اللّهُ مِكَ اللّهُ عَلَى اللّهُ مِلْ اللّهُ مِكَ اللّهُ عَلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عِلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَل

صَلُّواعَلَى الْحَبِيبِ! صلَّى اللهُ تعالى على محمَّد

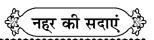
1: येह बयान अमीरे अहले सुन्नत المنظرة का शारजा ता मदीनतुल औलिया मुलतान (17 जुमादल उख़ा 1418 सि.हि./20-9-1997) को ब ज्रीअ़ए टेलीफ़ोन रिले हुवा था। तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तहरीरन हाज़िरे ख़िदमत है।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना



फुश्माते मुक्क फा, عَلَى اللّٰهَ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِدِوَتَلَمُ जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अख्लाह ضًا وَجُلُّ : उस पर दस रहमतें भेजता है । (السر)

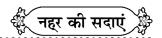
मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हजरते सय्यिदुना का'बुल अहुबार एक अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग थे, इस्लाम आ-वरी से क़ब्ल رَحْمَةُاللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه आप यहूदियों के बहुत बड़े आ़लिम थे। आप رَحْمَةُاللَّهِ تَعَالَي عَلَيْه आप यहूदियों के बहुत बड़े आ़लिम थे। कि बनी इस्राईल का एक शख़्स (तौबा करने के बा'द फिर) एक फ़ाहिशा के साथ काला मुंह कर के जब गुस्ल के लिये एक नहर में दाख़िल हुवा तो नहर की सदाएं आने लगीं: ''तुझे शर्म नहीं आती? क्या तूने तौबा कर के येह अ़हद नहीं किया था कि अब कभी ऐसा नहीं करूंगा।" येह सुन कर उस पर रिक्कृत तारी हो गई और वोह रोता चीख़ता येह कहता हुवा भागा: "अब कभी भी अपने प्यारे प्यारे अल्लाह ब्हें की ना फ़रमानी नहीं करूंगा।'' वोह रोता हुवा एक पहाड़ पर पहुंचा जहां बारह अफ्राद अल्लाह فَوْوَجَلُ की इबादत में मश्गूल थे। येह भी उन में शामिल हो गया। कुछ अ़र्से के बा'द वहां क़ह्त़ पड़ा तो नेक बन्दों का वोह कृाफ़िला गिज़ा की तलाश में शहर की त्रफ़ चल दिया। इत्तिफ़ाक़ से उन का गुज़र उसी नहर की त़रफ़ हुवा। वोह शख़्स ख़ौफ़ से थर्रा उठा और कहने लगा: मैं इस नहर की त्रफ़ नहीं जाऊंगा क्यूं कि वहां मेरे गुनाहों का जानने वाला मौजूद है, मुझे उस से शर्म आती है। येह रुक गया और बारह अफ़्राद नहर पर पहुंचे। तो नहर की सदाएं आनी शुरूअ़ हो गईं: ऐ नेक बन्दो ! तुम्हारा रफ़ीक़ कहां है ? उन्हों ने जवाब दिया : वोह कहता है: इस नहर पर मेरे गुनाहों का जानने वाला मौजूद है और मुझे उस से शर्म आती है। नहर से आवाज़ आई: 'سُبُحْنَ الله'! अगर तुम्हारा कोई अ़ज़ीज़ तुम्हें ईज़ा दे बैठे मगर फिर नादिम हो कर तुम से मुआ़फ़ी मांग ले और अपनी ग्लत् आ़दत तर्क कर दे तो क्या तुम्हारी उस से सुल्ह् नहीं हो जाती ? तुम्हारे



कृश्माही मुख्तका عَلَى اللَّهُ عَلَى وَاللَّهِ مَا कृश्माही मुख्तका । عَلَى اللَّهَ عَلَى وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَاللَّهِ اللَّهِ कृश्माही मुख्तका । عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّ عَلَى اللَّهُ عَ

रफीक ने भी तौबा कर ली है और नेकियों में मश्गूल हो गया है लिहाजा अब उस की अपने रब عَزُوبَعَلُ से सुल्ह़ हो चुकी है। उसे यहां ले आओ और तुम सब यहीं नहर के कनारे इबादत करो।" उन्हों ने अपने रफ़ीक़ को खुश ख़बरी दी और फिर येह सब मिल कर वहां मश्गूले इबादत हो गए हत्ता की उस शख्स का वहीं इन्तिकाल हो गया। इस पर नहर की सदाएं गुंज उठीं: "ऐ नेक बन्दो! इसे मेरे पानी से नहलाओ और मेरे ही कनारे दफ्नाओ ताकि बरोज़े क़ियामत भी वोह यहीं से उठाया जाए।" चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया। रात को उस के मज़ार के क़रीब अल्लाह عُرُّوجًا की इबादत करते करते सो गए। सुब्ह उन सब का वहां से कूच करने का इरादा था। जब जागे तो क्या देखते हैं कि उस के मजार के अंतराफ में 12 सर्व (या'नी एक दरख़्त जो सीधा और मख़्रूती (या'नी गाजर की) की शक्ल का होता है) के ख़ूब सूरत क़दआवर दरख़्त खड़े हैं। येह लोग समझ गए कि अल्लाह عَرْوَعِلُ ने येह हमारे लिये ही पैदा फ़रमाए हैं, ताकि हम कहीं और जाने के बजाए इन के साए में ही पड़े रहें। चुनान्चे वोह लोग वहीं इबादत में मश्गुल हो गए। जब उन में से किसी का इन्तिकाल होता तो उसी शख्स के पहलू में दफ्न किया जाता। हत्ता कि सब वफ़ात पा गए। बनी رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى أَجْمَعِينَ । इस्राईल उन के मजारात की जियारत के लिये आया करते थे (کتابُ التَّوَّابين ص٩٠٠) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अल्लाह كتابُ التَّوَّابين ص सदके हमारी बे हिसाब मिरफ़रत हो।

امِين بِجالِالنَّبِيِّ الْأَمِين مَنَّ الله تعالى عليه والهوسلَّم صَلُّوا عَلَى اللهُ تعالى على محتَّد صَلَّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تعالى على محتَّد



फ़् श्माती मुश्तफ़ा। عَلَى اللَّهَ عَلَيْهِ وَالِوَمَلُم जिस के पास मेरा ज़िक़ हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ارتری)

अल्लाह عُزُّ وَجَلَّ देख रहा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-ह्ज़ा फ़्रमाया ! अल्लाह عَرْبَيْل कितना रह़ीम व करीम है। जब कोई बन्दा सच्चे दिल से तौबा कर लेता है तो उस से राज़ी हो जाता है। इस ह़िकायत से येह भी दर्स मिला कि गुनाह करने वाला अगर्चे लाख पर्दों में छुप कर गुनाह करे अल्लाह عَرْبَعْلُ देख रहा है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि बुजुर्गाने दीन के मज़ारात पर हाज़िरी का सिल्सिला पिछली उम्मत के मोमिनों में भी था।

बार बार तौबा करते रहिये!

फु शुमार्जी मुख्तुफ़ा। صَلَى اللَّه تَعَالَى عَلَيْهِ وَالدِرَسُلُم जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दरूदे पाँक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (अवर्ष)

क्या सिर्फ नेक लोग ही जन्नत में जाएंगे ?

रहमत की बात आई है तो येह अर्ज करता चलुं कि बा'ज लोग ऐसे भी होते हैं जो नादानी में कह देते हैं: "जन्नत में सिर्फ नेकियों के ज्रीए ही दाख़िला मिलेगा और जो गुनाह करेगा वोह लाज़िमी तौर पर जहन्नम में जाएगा, रहमत से बख्शे जाने की बात हमारी समझ में नहीं आती।'' यकीनन येह शैतान के वस्वसे हैं। वरना मैं अपनी त्रफ़ से रब की रह़मत की बात कहां कर रहा हूं, सुनो.....! सुनो.....! अल्लाह عَزْوَجَلٌ ्पारह 24 सू-रतुज़्ज़ुमर आयत 53 में इर्शाद फ़रमाता है :

أنفسهم لاتقنطؤامن شأحمة

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम قُلُ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ ٱسْرَفُوْ اعْلَى फरमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने (ना फरमानियों के ज़रीए) अपनी जानों पर की रह़मत (عَرَّوَعَلَّ) ज़ियादती की अल्लाह (اللهِ ۖ إِنَّ اللهَ يَغْفِرُ النَّ نُوْبَجِبِيعً से ना उम्मीद न हो । बेशक अल्लाह إنَّكُهُوالْغَفُو ُ الرَّحِيْمُ ﴿) सब गुनाह बख्श देता है बेशक

वोही बख्शने वाला मेहरबान है।

ह़दीसे कुदसी है, ख़ुदाए रह़मान ﷺ का फ़रमाने रह़मत निशान है : سَبَقَتُ رَحُمَتِيُ غَضَبيُ या'नी मेरी रहमत मेरे गृज़ब पर सब्क़त रखती है। (مُسلِم ص٤٧١ حديث ٢٧٥١)

इमाम अहमद रजा खान عَلَيُهِ رَحُمَةُ الرَّحُمٰن के भाईजान उस्ताजे ज्मन, शहन्शाहे सुख्न ह्ज्रते मौलाना ह्सन रजा खान عَلَيُهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَّحْمَةُ الرَّحْمَةُ الرَّحْمَةُ الرَّحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَّحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَّحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْمِ الرَحْمَةُ الْمَامِ الْحَمْمُ الرَحْمَةُ الرَحْمَةُ الرَحْ अपने ना'तिया दीवान ''जौके ना'त'' के अन्दर बारगाहे खुदाए रहमान में अर्ज करते हैं : عُرُوجَلً

कृश्माती मुख्लका عَنْ اللَّهُ عَالَيْ وَالِدُوسَالُم अक्शाती मुख्लका को को पास मेरा ज़िक़ हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद इसरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (الإنزان)

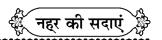
तूने जब से सुना दिया या रब سَبَقَتُ رَحُمَتِیُ عَلَیْ غَضَبِیُ तूने जब से सुना दिया या रब आसरा हम गुनाहगारों का और मज़्बूत हो गया या रब (ज्ाैक़े ना'त)

आ़जिज़ बन्दे की हिकायत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक्तीनन अल्लाह هहुत बहुत बहुत बहुत ही बड़ी है। वोह ब ज़िहर किसी छोटी सी अदा पर राज़ी हो जाए तो ऐसा नवाज़ता है कि बन्दा सोच भी नहीं सकता। चुनान्चे "किताबुत्ताव्वाबीन" में है, हज़रते सिय्यदुना का'बुल अह्बार ''किताबुत्ताव्वाबीन'' में है, हज़रते सिय्यदुना का'बुल अह्बार ''किताबुत्ताव्वाबीन'' में हैं इज़रते सिय्यदुना का'बुल अह्बार क्रिक्तां कुल अह्बार क्रिक्तां किता हैं विता है सिक्तां हैं विता सिर्मिद की तरफ़ चले, एक तो मिर्मिद में दाख़िल हो गया मगर दूसरे पर ख़ौफ़े ख़ुदा किए चले, एक तो मिर्मिद में दाख़िल हो गया मगर दूसरे पर ख़ौफ़े ख़ुदा के तारी हो गया और वोह बाहर ही बैठ गया और कहने लगा : ''मैं गुनहगार इस क़िबल कहां जो अपना गन्दा वुजूद ले कर अल्लाह कि में के पाक घर में दाख़िल हो सकूं।'' अल्लाह कि के उस की येह आ़जिज़ी पसन्द आ गई और उस का नाम सिद्दीक़ीन में दर्ज फ़रमा दिया। (अर्क्तां से भी बडा होता है।

नादिम बन्दे की हिकायत

इसी त्रह की एक ह़िकायत किताबुत्तव्वाबीन सफ़हा 83 पर लिखी है: एक इस्राईली से गुनाह सरज़द हो गया, वोह बेहद नादिम हुवा और बे क़रार हो कर इधर से उधर भागने लगा कि किसी त्रह उस का गुनाह मुआ़फ़ हो जाए और परवर्द गार وَرُونَا राज़ी हो जाए। अल्लाह وَرُونَا की बारगाहे रहमत में उस की बे क़रारी भरी नदामत को श-रफ़े क़बूलिय्यत



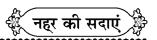
कृ श्रु**माही मुख्ताका :** عَلَى اللَّهَ عَالِيهِ زَالِهِ رَسُلًا पुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (اكرامان)

ह़ासिल हुई और अल्लाह ﷺ ने उस को विलायत के आ'ला तरीन रुत्बे सिद्दीक़िय्यत से नवाज़ दिया।

शरमिन्दगी तौबा है

सरकारे नामदार مَلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَم का फ़्रमाने ख़ुश गवार है: ثَلُتُهُ عَلَيْهِ وَالْهِ وَسَلَم या'नी शरिमन्दगी तौबा है। (१२८٧ مديث ٣٤٦٥ مروبة و من ٣٤٦ مديث على من ٣٤٦ مديث على من ٣٤٦ من

रोज़ादार डाकू

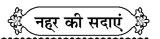


फुश्माने मुख्नफा عَلَيْ وَالِهِ وَسَلَم मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तृहारत है। (ايرسل)

उसी डाकूओं के सरदार को एहराम की हालत में त्वाफ़े ख़ानए का'बा में मश्गूल देखा, उस के चेहरे पर इबादत का नूर था और मुजा-हदात ने उसे कमज़ोर कर दिया था, मैं ने तअ़ज्जुब के साथ पूछा: क्या तुम वोही शख़्स नहीं हो ? वोह बोला: ''जी हां मैं वोही हूं और सुनिये! उसी रोज़े ने अल्लाह وَرُوَمُ الرَّيَاحِين مِن الرَّياحِين مِن الرَّياحِياحِين مِن الرَّياحِين مِن الرَّياحِياحِين مِن الرَّياحِين مِن الرَّياحِين مِن الرَّياحِياحِ

हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रखिये

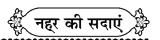
मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि किसी नेकी को छोटी समझ कर तर्क नहीं कर देना चाहिये, क्या पता वोही छोटी नज़र आने वाली नेकी अल्लाह عُرُوجَلُ की बारगाह में मक्बूल हो जाए और हमारे दोनों जहां संवर जाएं। इस हि़कायत से **नफ़्ली रोज़े** की **अहम्मिय्यत** भी मा'लूम हुई। बेशक हर एक कसरत के साथ नफ़्ली रोज़े रखने की ताकृत नहीं पाता, ताहम कम अज् कम हर पीर शरीफ़ का रोज़ा तो रख ही लेना चाहिये कि **सुन्नत** है नीज़ नेक बनाने के अज़ीम नुस्खे म-दनी दा'वते इस्लामी المَحْمَدُ لِلْهُ عَزَوْجَلُ । इन्आ़मात में से 58वां म-दनी इन्आ़म भी المَحْمَدُ لِلهُ عَزَوْجَلُ ا से वाबस्ता कसीर इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस ''म-दनी इन्आ़म" के मुताबिक पीर शरीफ़ का रोजा रखने की सुन्नत अदा करते हैं और आ़शिक़ाने रसूल के हर दिल अ़ज़ीज़ 100 फ़ी सदी इस्लामी चेनल **म-दनी चेनल** पर हर पीर शरीफ़ को बराहे रास्त (या'नी LIVE) ''मुनाजाते इफ्तार'' का सिल्सिला होता और आशिकाने रसूल के इफ्तार करने का रूह परवर मन्ज़र दिखाया जाता है। आप भी ब निय्यते सवाब ''म-दनी चेनल'' देखते रहिये और दूसरों को भी देखने की दा'वत दे कर ख़ूब सवाब का अंजीम ख़्जाना लूटिये।



कृश्माते मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद : مَثَى اللَّهُ تَعَالَيْ عَلَيْهِ وَ الْهِوَسَلَمُ कृश्माते मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (المُرافَ

आतश परस्त घराने का कुबूले इस्लाम

आइये ! लगे हाथों "म-दनी चेनल" की एक म-दनी बहार सुनते हैं: बम्बई (हिन्द) के जहांगीर नामी एक ख़ूबरू नौ जवान फ़िल्मी अदाकार के बयान का लुब्बे लुबाब है : हमारा सारा घर आग की पूजा किया करता था, ऐसे में म-दनी चेनल हमारे लिये गोया पैगामे नजात बन कर आया ! क़िस्सा यूं है कि मेरी अम्मी बड़े शौक़ से म-दनी चेनल देखा करती थी, एक बार मैं ने सोचा कि आखिर अम्मीजान इतनी दिलचस्पी के साथ ''सब्ज इमामे वाले मौलानाओं'' की बातों को क्युं सुना करती है, लाओ मैं भी तो देखूं कि येह ''मौलाना लोग'' क्या बोलते हैं! चुनान्चे मैं ने भी T.V. पर ''म-दनी चेनल'' लगाया : म-दनी मुज़ा-करे का सिल्सिला था, मुझे बहुत अच्छा लगा, मैं ग़ौर से सुनता रहा, म-दनी मुजा-करे की बातें तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त होती रहीं, मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर होने लगी और मेरा ज़मीर पुकार पुकार कर कहने लगा: जहांगीर! तू गुलत राह पर भटक रहा है, अगर नजात चाहता है तो सब्ज़ इमामे वालों का सच्चा दीन या'नी मज़्हबे इस्लाम क़बूल कर ले, اَلْتَحَمُدُ لِلْهُ عُزُوجًا में ने दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर राबिता किया और मुसल्मान हो गया । मैं ने दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से भी राबिता किया, उन्हों ने मेरी ख़ूब रहनुमाई फ़रमाई, उन के हुस्ने अख़्ताक़ ने मुझे बेहद मु-तअस्सिर किया और अल्लाह عُزُوْمَلُ की रह़मत से अब हमारा सारा घर इस्लाम के दामन में आ चुका है। मैं रात के तीन तीन बजे तक म-दनी चेनल पर आने वाला ''म-दनी मुज़ा-करा'' देखता



कुश्माने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अख्लारह : مَثَى اللَّهَ تَعَالَيْ عَلَيْهِ وَ اللَّهِ مَا اللَّهُ عَل عَزَّ وَجُلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

रहा हूं, उस में एक बार दाढ़ी रखने की तरग़ीब सुन कर मैं ने दाढ़ी भी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी है और बम्बई के दा'वते इस्लामी वाले आशिकाने रसूल की सोहबत में रह कर इस्लामी न-ज़िरय्यात व नमाज़ वग़ैरा इबादात की भी ता'लीम हासिल कर रहा हूं।

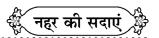
म-दनी चेनल लाएगा सुन्तत की घर घर में बहार कर दे मौला दो जहां में नाज़िरीं का बेड़ा पार صَدُّواعَكَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى محتَّى

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बात बहुत दूर निकल गई, उस रोज़े की ब-र-कत और अल्लाह مَوْوَجَلُ की रहमत का तिज़्करा हो रहा था, سُبُحُنَالله ! डाकूओं के सरदार को रोज़े ने कहां से कहां पहुंचा दिया ! रोज़े की ब-र-कत से उसे हिदायत भी मिली और इबादतो रियाज़त की सआ़दत भी मिली ।

बख्शिश का बहाना

कीमियाए सआदत में ह़ज़रते शैख़ कितानी فَنَوْ سُونُ النُورِي फ़्रमाते हैं: मैं ने ह़ज़रते सिय्यदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّهِ الْهَادِي को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देख कर पूछा: مَا فَعَلَ اللّهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَرْوَجَلُ ने आप के साथ क्या मुआ़–मला फ़रमाया ? फ़्रमाने लगे: मेरी इबादतें और रियाज़तें तो काम न आई, अलबत्ता रात को उठ कर जो दो रक्अ़त तहज्जुद पढ लिया करता था उसी के सबब मिफ्ररत हो गई।

(کیمیائے سعادت ج۲ص۲۰۱)



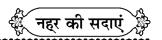
फुश्माते मुख्लफ़ा عَلَى اللَّهُ عَلَى عَلَيْوَ الدِرَسَامُ जिस के पास मेरा ज़िक़ हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (أَيُحِمْتِهُ)

(या'नी अल्लाह عَوْوَجَلُ की रह़मत ''बहा'' या'नी क़ीमत नहीं मांगती बल्कि उस की रह़मत तो ''बहाना'' ढूंडती है)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ्राइज़ की अदाएगी के साथ साथ नवाफ़िल की भी आदत डालनी और खुसूसन तहज्जुद तो हरगिज़ नहीं छोड़नी चाहिये, क्या मा'लूम तहज्जुद में उठने की मशक्क़त बारगाहे इलाही में क़बूलिय्यत पा जाए और हमारी मिग्फ़रत का बहाना बन जाए।

बा'ज़ मुसल्मान ज़रूर जहन्नम में जाएंगे

समझे कि चूंकि अल्लाह بالله عَرْدِين की रहमत बहुत बड़ी है लिहाज़ा अब नमाज़ें छोड़ दो..... र-मज़ान के रोज़े भी मत रखो..... ग.८८ और इन्टरनेट के रू बरू बैठो और ख़ूब फ़िल्में डिरामे देखो..... खूब बद निगाही करो..... अल्लाह عَرْدَيْن की रहमत बहुत बड़ी है अब मां बाप को सताना शुरूअ कर दो..... ख़ूब गालियां बको..... कसरत से झूट बोलो..... मुसल्मानों की ख़ूब ग़ीबतें करो..... मुसल्मानों के दिल दुखाओ..... बद अख़्लाक़ी के साबिक़ा सारे रेकॉर्ड तोड़ दो अल्लाह عَرْدَيْن की रहमत बहुत बड़ी है। दाढ़ी मुंडवा दो या ख़श्ख़शी दाढ़ी रखो..... चोरी करो..... डाका डालो..... जुल्मो सितम की आंधियां चला दो..... खूब शराब पियो..... जूआ खेलो बल्क जूआ और मुनश्शियात का अड्डा ही खोल डालो! जो जो गुनाह अभी तक नहीं कर पाए عَرَدَيْن वोह भी कर डालो क्यूं कि अल्लाह

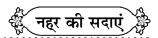


फुशमा**ी मुख्लफ़ा عَ**لَيْ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ कुशमा**ी मुख्ल**फ़ा عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ अा शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (إلْهِ)

रहमत बहुत बड़ी है। मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह प्रिकृत आप पर अपना खूब फ़ज़्लो करम फ़रमाए और आप को बे हिसाब बख़्शे, आमीन। इस त्रह शैतान कान पकड़ कर आप को अपनी इता़अ़त में न लगा दे। याद रिखये! जहां अल्लाह दिन्हें रही़म व करीम है वहां जब्बार व क़हहार भी है, जहां वोह नुक्ता नवाज़ है वहां बे नियाज़ भी है। अगर उस ने किसी छोटे से गुनाह पर गिरिफ़्त फ़रमा ली तो कहीं के न रहेंगे। ख़बरदार! ख़बरदार! ख़बरदार! येह तै है कि कुछ न कुछ मुसल्मान अपने गुनाहों के सबब दाख़िले जहन्नम भी होंगे। हमें अल्लाह ख़ुफ़्या तदबीर से हर वक़्त लरज़ं व तरसां रहना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि उन जहन्नम में जाने वालों की फ़ेहरिस में हमारा नाम भी शामिल हो।

फ़ारूक़े आ'ज़म की म-दनी सोच

इमामुल आदिलीन, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सिय्यदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म وَعَى الله وَعَى الله الله وَالله وَال



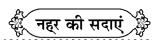
कुश्माते मुख्तका عَنَى اللَّهَ عَلَيْ وَالِوَمَامُ जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा इस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।(الههِ)

बन्दूक़ की एक गोली.....

मैं आप को अपनी बात अ़क्ली दलील से समझाने की कोशिश करता हूं, म-सलन इस वक्त इस इन्तिमाअ़ में दस हज़ार इस्लामी भाई मौजूद हों और कोई दहशत गर्द क़रीबी मकान की छत पर पिस्तोल ले कर खड़ा हो जाए और ए'लान करे मैं सिर्फ़ एक गोली चलाता हूं अगर लगेगी तो सिर्फ़ एक ही को लगेगी बाक़ियों को कुछ नहीं कहूंगा। क्या ख़याल है ? सिर्फ़ एक ही को तो गोली लगनी है! क्या बिक़य्या नव हज़ार नव सो निनान्वे इस्लामी भाई बे ख़ौफ़ हो जाएंगे ? हरगिज़ नहीं बिल्क हर एक इस ख़ौफ़ से भाग खड़ा होगा कि कहीं किसी एक को लगने वाली ''वोह गोली'' मुझे ही न आ लगे! उम्मीद है मेरी बात समझ में आ गई होगी।

आग की जूतियां

जब येह तैं शुदा अम्र है कि कुछ न कुछ मुसल्मान गुनाहों के सबब जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे तो आख़िर हर मुसल्मान इस बात से क्यूं नहीं डरता कि कहीं मुझे भी जहन्नम में न डाल दिया जाए। ख़ुदा مَوْرَعَلُ की क़सम! बन्दूक़ की गोली की तक्लीफ़ जहन्नम के अ़ज़ाब के सामने कुछ भी नहीं। मुस्लिम शरीफ़ में है: "जहन्नम का सब से हलका अ़ज़ाब येह है कि मुअ़ज़्ज़ब (या'नी अ़ज़ाब पाने वाले) को आग की जूतियां पहनाई जाएंगी जिस की गरमी और तिपश से उस का दिमाग़ पतीली की त्रह खौलता होगा, वोह येह समझेगा कि सब से ज़ियादा अ़ज़ाब मुझी पर है।" (१११ عَدِيثُ अ्रांक के अल्लाह السلم صالح الله عَنْ مَنْ के कि अल्लाह عَنْ مَنْ الله عَنْ مَنْ الله عَنْ مَنْ أَجَنَا के अल्लाह عَنْ مَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ مَنْ الله عَنْ الل

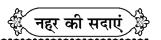


कुश्माते मुख्तका عَزَّ وَجَلَّ तुम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह : عَلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيُو اللهِ وَسَلَم अल्लाह रहमत भेजेगा । (اتناسل)

लिये येह फ़िदये में दे देता ?" तो वोह कहेगा : "ज़रूर ।" (مَا صَالِية ٢٠١ مَا عَلَى عَامُ ٢٠١ مَا جَالِية) या'नी सभी कुछ दे डालूंगा कि कहीं येह आग की जूतियां मेरे पाउं से निकलती हों ! बस किसी त्रह भी इस अ़ज़ाब से मुझे छुटकारा मिल जाए ।

क्या सब से हलका अजाब बरदाश्त हो जाएगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सोचो ! बार बार सोचो ! अगर किसी छोटे से गुनाह के सबब येही सब से छोटा और हलका अजाब किसी पर मुसल्लत् कर दिया गया तो उस का क्या बनेगा ? म-सलन किसी को गाली दी हालां कि येह कबीरा गुनाह है फिर भी अगर इस जुर्म की पादाश में सब से हलका अजाब भी हो गया तो क्या होगा ? मां बाप को सताने के जुर्म में कि येह भी कबीरा गुनाह है मगर इस जुर्म पर भी अगर सब से हलका अ़ज़ाब ही हो जाए तो इस की बरदाश्त किस में है ? इसी त्रह् रोज् मर्रा किये जाने वाले गुनाहों पर गौर करते चले जाइये। झूट बोलने के सबब, किसी की गीबत करने के सबब, चुगुल खोरी के सबब, हराम रोज़ी कमाने के सबब, नशा करने के सबब, फ़िल्में और डिरामे देखने के सबब, गाने बाजे सुनने के सबब, बल्कि T.V. पर सिर्फ़ औरत से खबरें सुनने के सबब अगर सब से हलका अजाब हो गया तो क्या होगा ? वोह औरत भी कितनी बद नसीब है जो चन्द सिक्कों की खातिर T.V. पर आ कर ख़बरें सुनाती है। काश ! उस को येह एहसास हो जाता कि मेरे ज्रीए लाखों मर्द बद निगाही का गुनाह कर के, अपनी आंखों को ह्राम से पुर कर के अपनी आंखों में जहन्नम की आग भरने का सामान कर रहे हैं और इस सबब से मैं खुद भी बहुत ज़ियादा गुनहगार हुई जा रही हूं! बहर हाल जो इस त्रह अपने दिल को बहलाता है कि मैं ने तो सिर्फ़ खबरों के लिये T.V. रखा है, वोह कान खोल कर सुन ले कि मर्द का

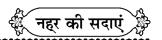


फ़श्मार्जी मुख्ताका عَلَى اللَّهُ عَلَيْ وَالِدُوسَاءُ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मिंग्फ़रत है। (ﷺ)

अज्निबय्या औरत को देखना या औरत का अज्नबी मर्द को ब शहवत देखना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. तो अगर T.V. पर सिर्फ़ ख़बरें देखने, सुनने के सबब ही जहन्नम का हलका अजाब मुसल्लत कर दिया गया और आग की जूतियां पहना दी गईं तो क्या बनेगा ? अपने अन्दर इस्लाह का जज़्बा बेदार करने के लिये अपना ज़ेहन बनाइये कि अगर बिग़ैर शर-ई उ़ज़ के मैं ने नमाज़ की जमाअ़त तर्क कर दी और सब से हलका अजाब दे दिया गया तो मेरा क्या होगा! अगर बे पर्दगी कर ली, अपनी भाभी से बे तकल्लुफ़ी की या उस को क़स्दन देखा, इसी तरह चची, ताई, मुमानी, साली, खा़लाजा़द, मामूंजा़द, फूफीजा़द, चचाजा़द या तायाजाद से पर्दा न किया उन के सामने बिला तकल्लुफ आते जाते रहे, उन को देखते रहे, उन से हंस हंस कर बातें करते रहे और इन जराइम में से किसी एक गुनाह की ह़द तक पहुंचने वाले जुर्म की पादाश में अगर पाउं में आग की जूतियां डाल दी गईं तो क्या बनेगा ? जी हां ! भाभी, चची, ताई, मुमानी, वगैरा वगैरा जिन का तिज्करा हुवा येह सब अज्निबय्या और गैर महूरमा औरतें हैं इन से और हर उस औरत से शरीअ़त ने पर्दे का हुक्म दिया है जिन से शादी हो सकती है। इसी त्रह औरत भी तमाम गैर महारिम रिश्तेदारों से पर्दा करे।

जहन्मम के ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब की झिल्कयां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने आप को कम अज़ कम छोटे और हलके अ़ज़ाब से ही डरा दीजिये हालां कि जहन्नम में एक से एक ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब हैं। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ किताब बयानाते अ़त्तारिय्या जिल्द 2 सफ़हा 293 ता 297 पर है: वोह बन्दा भी कितना अ़जीब है जो येह जानता है कि दोज़ख़ सख़्त तरीन अ़ज़ाब का मक़ाम है फिर भी गुनाहों का

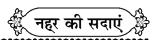


कुश्माही मुख्लका عَلَيْهُ وَاللَّهُ अंशाही मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह نَامِلُونَ) उस के लिये एक क़ीरात् अज़ लिखता और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (المِلْوَنِ)

इरतिकाब करता है। मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अगर **जहन्नम** को सुई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम जमीन वाले उस की गरमी से हलाक हो जाएं। अहले जहन्नम को जो मश्रूब पीने के लिये दिया जाएगा वोह इस क़दर ख़त़रनाक है कि अगर उस का एक डोल दुन्या में बहा दिया जाए तो दुन्या की तमाम खेतियां बरबाद हो जाएं न अनाज उगे न फल। जहन्नम के सांप और बिच्छू बेहद ख़ौफ़नाक हैं। ह़दीस शरीफ़ में है: ''जहन्नम में अ-जमी ऊंटों की गरदन की मिस्ल बड़े बड़े सांप होंगे जो दोज़िख्यों को डसते होंगे वोह ऐसे ज़हरीले होंगे कि अगर एक मर्तबा काट लेंगे तो चालीस साल तक उन के जहर की तक्लीफ नहीं जाएगी और लगाम लगाए हुए ख़च्चरों के बराबर बड़े बड़े बिच्छ्र जहन्नमियों को डंक मारते रहेंगे कि एक बार डंक मारने की तक्लीफ़ चालीस साल तक बाकी रहेगी।" (۱۷۷۲۹ حدیث ۲۱۲ مسند امام احمدج ۲ ص ۲۱۶ حدیث तिरमिज़ी की रिवायत में है: ''जहन्नम में ''सऊद'' नामी आग का एक पहाड है जिस की बुलन्दी सत्तर बरस की राह है। काफिर जहन्नमियों को उस पर चढाया जाएगा। सत्तर बरस में वोह उस की बुलन्दी पर पहुंचेंगे फिर ऊपर से उन्हें गिराया जाएगा तो सत्तर बरस में वोह नीचे पहुंचेंगे इसी तरह उन को अजाब दिया जाता रहेगा।" (۲۰۸۵ حدیث ۲۲۰ مناع عنه کا जहन्नम के ऐसे ऐसे ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब का तिज़्करा सुनने के बा वुजूद भी जो गुनाहों से बाज़ न आए उस पर वाक़ेई तअ़ज्जुब है। आख़िर इन्सान को इस दुन्या ने क्या दे देना है जो इस की रंगीनियों में गुम और इस की लुटमार में मसरूफ़ है।

जहन्नम की ख़त्रनाक गि़जाएं

लज़ीज़ गिज़ाएं मज़े ले ले कर खाने वालों को जहन्नम की भयानक गिज़ाओं को नहीं भूलना चाहिये! तिरिमज़ी की रिवायत में है:

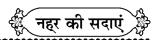


फुश्मार्जी मुख्न पर दुरूदे पाक लिखा तो जब : عَنَى اللَّهُ عَالَى عَلَيْهِ وَالِدِوَالِدِ وَاللَّهِ اللَّهُ عَل तक मेरा नाम उस में रहेगा फि्रिश्ते उस के लिये इस्तिग्फ़ार करते रहेंगे । (جُرِانًے)

दोज़िख़्यों पर भूक मुसल्लत की जाएगी तो येह भूक उन सारे अज़ाबों के बराबर हो जाएगी जिन में वोह मुब्तला हैं वोह फ़रियाद करेंगे तो उन्हें ज़रीअ़ (ज़हरीली कांटेदार घास) में से दिया जाएगा, जो न मोटा करे न भूक से नजात दे। फिर वोह खाना मांगेंगे तो उन्हें फन्दा लगने वाला खाना दिया जाएगा तो उन्हें याद आएगा कि वोह दुन्या में फन्दा (लगे निवाले) को पानी से निगलते थे चुनान्चे वोह पानी मांगेंगे तो उन को लोहे के ज़म्बूर (सन्सी) से खौलता हुवा पानी दिया जाएगा जब वोह उन के मुंह के क़रीब होगा तो उन के मुंह भून देगा फिर जब उन के पेट में दाख़िल होगा तो उन के पेटों की हर चीज़ काट डालेगा।(१०९० ﴿﴿ الله عَلَيْ الله كَانَ عَلَيْ عَلَيْ الله كَانَ عَلَيْ الله كَانَ عَلَيْ الله كَانَ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ الله كَانَ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ الله كَانَ عَلَيْ عَلَي

न मायूस हों न बे ख़ौफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े खुदा वन्दी وَوَعَلُ से लरज़ उठिये ! और अपने गुनाहों से तौबा कर लीजिये ! हमें अल्लाह وَوَعَلُ की रह़मत से मायूस भी नहीं होना चाहिये और उस के क़हरो गृज़ब से बे ख़ौफ़ भी नहीं रहना चाहिये, दोनों ही सूरतों में तबाही है, जो कोई रह़मते खुदा वन्दी भी नहीं रहना चाहिये, दोनों ही सूरतों में तबाही है, जो कोई रह़मते खुदा वन्दी से मायूस हो गया वोह भी हलाक हुवा और जो गुनाहों पर दिलेर हो गया और पकड़ में आ गया तो वोह भी बरबाद हुवा । बहर हाल ग़ैरत व मुरव्वत का तक़ाज़ा भी येही है कि जिस परवर्द गार وَوَعَلُ اللهُ عَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَم करम से हमें बे शुमार ने 'मतें अ्ता फ़रमाई हैं उस की इताअ़त व फ़रमां बरदारी की जाए और उस के मह़बूब, दानाए गुयूब के



कृश्मार्ज मुख्यका عنيوز (بورَسَلُم जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अख्टाह نصلي الله تعالى عليوز (بورَسَلُم उस पर दस रहमते भेजता है। (المر)

दामने करम से हर दम वाबस्ता रहते हुए उन की सुन्नतों को अपनाया जाए कि इसी में हमारे लिये दुन्या व आख़िरत की भलाई है।

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब ! नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब ! कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा ! कब मैं बीमार मदीने का बनूंगा या रब ! अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

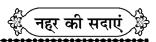
امِين بِجالِالنَّبِيِّ الْأَمين مَلَّى الله تعالى عليه والدوسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इिष्क्रिताम की त्रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुळ्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत के के फ्रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महळ्वत की उस ने मुझ से महळ्वत की और जिस ने मुझ से महळ्वत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

सीना तेरी सुन्तत का मदीना बने आक़ा जन्तत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना صَلُّواعَكَى الْحَبِيبِ! صلَّ اللهُ تعالى على محتَّد

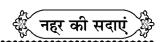
"इयादत करना रसूले मोहतरम की सुन्नते मुबा-रका है" के इक्तीस हुरूफ़ की निस्बत से इयादत के 31 म-दनी फूल

الادب المفريض (1) : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيُهِ وَالِهِ وَسَلَّم हिंदी मिरीज़ की इयादत करो (ماريض الادب المفرد ص١٣٧ حديث ١٣٧ (الادب المفرد ص١٣٥ किसी मरीज़ की इयादत के लिये जाता है तो अल्लाह عَرُوْجَلُ उस पर पछत्तर हज़ार (75,000) फ़िरिश्तों का साया करता है और उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखता है और हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह



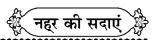
कु**श्माही मुख्ल्फा** مَنْيَ اللّهَ عَلَيْهِ رَالِهِ وَسَلَّمَ **प्रक्रियाही मुख्ल्फा भू**ल गया वोह इंजन्तत का रास्ता भूल गया। (غربُرُه)

मिटाता है और एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है यहां तक कि वोह अपनी जगह पर बैठ जाए, जब वोह बैठ जाता है तो रहमत उसे ढांप लेती है और अपने घर वापस आने तक रहमत उसे ढांपे रहेगी (६٣٩٦ عديث ٢٢٢ عديث ٢٢٦) (مُغَجَمُ ٱوْسَطع ٣ص शख़्स किसी मरीज़ की **इयादत** को जाता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है : तुझे बिशारत (या'नी खुश ख़बरी) हो तेरा चलना अच्छा है और तूने जन्नत की एक मन्जिल को अपना ठिकाना बना लिया (۱٤٤٢ ابن ملجه ج٢ ص١٩٢ حديث) **4**) जो मुसल्मान किसी मुसल्मान की **इयादत** के लिये सुब्ह को जाए तो शाम तक उस के लिये सत्तर हजार फिरिश्ते इस्तिग्फार (या'नी बख्शिश की दुआ) करते हैं और शाम को जाए तो सुब्ह तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस्तिग्फ़ार करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग् होगा (٩٧١ حديث ٢٩٠م ﴿5﴾ जिस ने अच्छे त्रीक़े से वुज़ू किया फिर अपने मुसल्मान भाई की सवाब की निय्यत से इयादत की तो उसे जहन्नम से 70 साल के फासिले तक दूर कर दिया जाएगा (۳۰۹۷ ابوداؤدج٣ص١٤٨ صديث٢٤٠٥) (ابوداؤدج٣ص١٤٨ صديث٢٤٨ तेरे लिये दुआ़ करे कि उस की दुआ़ फिरिश्तों की दुआ़ की मानिन्द है (ابنِ ماجه ۲۶ ص۱۹۱ مدیث ۱۹۱۱) (۲) मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाए उस की कोई दुआ़ रद नहीं होती (۱۹مینه ۱۹۱ مینه) (الترغیب والترهیب والترهیب) अ किसी मुसल्मान की इयादत को जाए तो 7 बार येह दुआ़ पढ़े: अगर मौत नहीं आई है तो اَسُأَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرُشِ الْكَرِيْمِ اَنُ يَشُفِيْكَ ـ(1) उसे शिफा हो र्जाएंगी (११٠٦ صديث ٢٥١ ﴿ ابوداؤد ج٣ ص ٢٥١ هَا झ्यादत करना सुन्नत है अगर मा'लूम है कि इयादत के लिये जाने से उस बीमार पर गिरां (या'नी ना गवार) गुज़रेगा, ऐसी हालत में इयादत के लिये मत जाइये (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 505) 🗳 अगर मरीज़ से आप के दिल में रन्जिश या त्बीअ़त को उस से मुना-सबत नहीं फिर भी इयादत कीजिये 1. तरजमा : मैं अ्-ज्मत वाले, अर्शे अजीम के मालिक **अल्लाह** غُرُوَجًا से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।



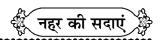
फ़्श्रमाते सुश्लफ़ा عَنْيُ اشْنَعَالِي عَلَيُو الدِوَسَلَم जिस के पास मेरा ज़िक़ हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (نَوَنَ)

🕼 इत्तिबाए सुन्नत की निय्यत से **इयादत** कीजिये अगर महज इस लिये बीमार पुर्सी की, कि जब मैं बीमार पड़ूं तो वोह भी मेरी तीमार दारी के लिये आए तो सवाब नहीं मिलेगा 👺 किसी की **इयादत** के लिये जाएं और मरज की सख्ती देखें तो उस को डराने वाली बातें न करें म-सलन तुम्हारी हालत ख्राब है और न ही इस अन्दाज़ पर सर हिलाएं जिस से हालत का ख़्राब होना समझा जाता है 🕼 इयादत के मौकुअ़ पर मरीज़ या दुखी शख़्स के सामने अपने चेहरे पर रन्जो गृम की कैफ़िय्यत नुमायां कीजिये 🚱 बातचीत का अन्दाज हरगिज ऐसा न हो कि मरीज या उस के अजीज को वस्वसा आए कि येह हमारी परेशानी पर खुश हो रहा है ! 🍪 मरीज़ के घर वालों से भी इज़्हारे हमदर्दी कीजिये और जो ख़िदमत या तआ़वुन कर सकते हों कीजिये 🖏 मरीज़ के पास जा कर उस की त़बीअ़त पूछिये और उस के लिये सिह्ह्त व आ़फ़िय्यत की दुआ़ कीजिये 🤹 निबय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत की आदते करीमा येह थी कि जब किसी मरीज़ की صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم येह फ़रमाते : لَا جَأْسَ طُهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى (۲۲۱۲ ص ٥٠٠ حدیث ۲۲۱۹) 🐉 मरीज् से अपने लिये दुआ़ करवाइये कि मरीज् की दुआ़ रद नहीं होती 👺 फ़रमाने मुस्त़फ़ा مِسَلَّم عَلَيُو وَالِهِ وَسَلَّم मरीज़ की पूरी इयादत येह है कि उस की पेशानी पर हाथ रख कर पूछे कि मिज़ाज कैसा है ? (۲۷٤٠ تـرمـنى ع ع م ۲۳۴مـديـث) मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़्रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيُهِ رَحْمَةُ الْحَيَّان इस ह़दीसे पाक के तह्त फ़्रमाते हैं: या'नी जब कोई शख़्स किसी बीमार की मिज़ाज पुर्सी करने जावे तो अपना हाथ उस की पेशानी पर रखे फिर जबान से येह (या'नी आप की तुबीअत कैसी है) कहे, इस से बीमार को तसल्ली होती है, मगर बहुत देर तक हाथ न रखे रहे, येह हाथ रखना इज़्हारे **मह़ब्बत** के लिये है (मिरआत, जि. 6, स. 358 बि तसर्रुफ़िन) 1. तरजमा : कोई हरज की बात नहीं अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो येह मरज (गुनाहों से) पाक करने वाला है।



फु शमा**ी मु**ख्लाफा : صَلَّى اللَّهَ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ لِهِ وَسَلَّم मुश्रमा**ी मुश्र** पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَرُّ وَجَلً) उस पर दस रहमतें भेजता है । (سل)

🔹 मरीज के सामने ऐसी बातें करनी चाहिएं जो उस के दिल को भली मा'लूम हों, बीमारी के फ़ज़ाइल और अल्लाह عُزُوْجَلُ की रहमत के तज़्किरे कीजिये ताकि उस का ज़ेहन सवाबे आख़िरत की त्रफ़ माइल हो और वोह शिक्वा व शिकायत के अल्फ़ाज़ ज़बान पर न लाए 🖏 इयादत करते हुए मौकुअ़ की मुना-सबत से मरीज़ को नेकी की दा'वत भी पेश कीजिये, खुसूसन नमाज़ की पाबन्दी का ज़ेह्न दीजिये कि बीमारियों में कई नमाज़ी भी नमाज़ों से गा़फ़िल हो जाते हैं 🚭 मरीज़ को म-दनी चेनल देखने की रग्बत दिलाइये और उस की ब-र-कतों से आगाह कीजिये 🤹 मरीज़ को **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की और खुद सफ़र के क़ाबिल न हो तो अपनी त्रफ़ से घर के किसी फ़र्द को सफ़र करवाने की तरग़ीब फ़रमाइये। और म-दनी काफिलों की वोह **म-दनी बहारें** सुनाइये जिन में दुआ़ओं की ब-र-कतों से मरीज़ को शिफ़ाएं मिली हैं 🚱 मरीज़ के पास ज़ियादा देर तक न बैठिये और न शोरो गुल कीजिये हां अगर बीमार खुद ही देर तक बिठाए रखने का ख़्वाहिश मन्द हो तो मुम्किना सूरत में आप उस के जज़्बात का एहतिराम कीजिये 🥵 बा'ज् लोगों की आ़दत होती है कि मरीज् या उस के नुमायन्दे से मिलते हैं तो कुछ न कुछ इलाज बताते हैं और बा'ज़ तो मरीज़ से इसरार करते हैं कि मैं जो इलाज बता रहा हूं वोह कर लो, फुलां दवा ले लो, ठीक हो जाओगे ! मरीज को चाहिये कि "जिस तिस" (या'नी हर किसी) का बताया हुवा इलाज न करे, कि ''नीम हकीम ख़त्रए जान'', किसी का बताया हुवा इलाज करने से पहले अपने तबीब से मश्वरा कर ले। ख़बरदार ! जो त़बीब न होने के बा वुजूद इ़लाज बताते रहते हैं वोह इस से बाज़ रहें 😂 मरीज़ की इयादत के मौक़अ़ पर तोह़फ़े लाना उम्दा काम है मगर न लाने की सूरत में इयादत ही न करना और दिल में येह ख़याल करना कि अगर कुछ न ले कर जाएगा तो वोह क्या सोचेंगे कि खा़ली हाथ इ्यादत के लिये आ गए। खाली हाथ भी इयादत कर ही लेनी चाहिये न करना सवाब



फुशमारी मुख्त का पढ़ना भूल गया वोह : صَلَى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ رَابِهُ وَسَلَّم पुरुमारी मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (غربة)

से महरूमी का बाइस है अप इयादत के लिये जाते हुए अगर फल और बिस्किट वगैरा तहाइफ़ ले जाने लगें तो मश्वरा है कि मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ़ कुछ म-दनी रसाइल भी ले जा कर मरीज़ को पेश कीजिये तािक वोह मुलाकृतियों, (और अगर अस्पताल में हो तो) पड़ोसी मरीज़ें और उन के अज़ीज़ें को तोह्फ़तन दे सकें बिल्क ज़हे नसीब! मरीज़ खुद भी कुछ म-दनी रसाइल हिदय्यतन मंगवा कर इस गृरज़ से अपने पास रख कर सवाब कमाए भिक्तिक की इयादत भी जाइज़ है, क्यूं कि इयादत हुकूक़े इस्लाम से है और फ़ासिक़ भी मुस्लिम है (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 505) भरतद और कािफ़रे हरबी की इयादत जाइज़ नहीं (फ़ी ज़माना दुन्या में सारे कािफ़र हरबी हैं) अब मज़हब (गैरे मुरतद) की इयादत करना मन्अ़ है।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ दो कुतुब (1) 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" हिस्सा 16 और (2) 120 सफ़हात की किताब "सुन्नतें और आदाब" हिदय्यतन हासिल कीजिये और पिंढ़ये। सुन्नतों की तरिबय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्ततें क़ाफ़िले में चलो होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो صَدُّواعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّا اللهُ تَعالَى على محبَّد

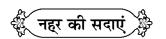
येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग्मी की तक्रीबात, इन्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तिमल पेम्फ़लेट तक्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख्बार फ़रोशों या बच्चों के ज्रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज कम एक अदद सुन्ततों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

तालिबे गमे मदीना व बक़ीअ़ व मिंग्फरत व बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस



14 शव्वालुल मुकर्रम 1433 हि. 2-9-2012



कृश्माते मुख्तुका عَلَيْهِ وَ الْهِ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक़ हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़ा हो गया।(انونا)

क्ष्र फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
मोतियों का ताज	1	बिख्शिश का बहाना	
अल्लाह عَزُّ وَجَلَّ देख रहा है	$\left[4\right]$	बा'ज मुसल्मान ज़रूर जहन्नम में जाएंगे	
बार बार तौबा करते रहिये !	$\left[4\right]$	फ़ारूक़े आ'ज़म की म-दनी सोच	
व्या सिर्फ़ नेक लोग ही जन्नत में जाएंगे ?	5	बन्दूक़ की एक गोली	
अा़जिज़ बन्दे की हि़कायत	6	आग की जूतियां	
नादिम बन्दे की हिकायत	6	क्या सब से हलका अ़ज़ाब बरदाश्त हो जाएगा ?	
शरमिन्दगी तौबा है	7	जहन्नम के ख़ौफ़्नाक अ़ज़ाब की झल्कियां	
रोजादार डाकू	$\left[7\right]$	जहन्नम की ख़त्रनाक ग़िज़ाएं	
हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रखिये	8	न मायूस हों न बे ख़ौफ़	
आतश परस्त घराने का क़बूले इस्लाम	9	इयादत के 31 म-दनी फूल	

﴿ أَفَدُومُ الْحَ

مطبوعه	كتاب	مطبوعه	كتاب
دارالكتب العلميه بيروت	حلية الاولياء	مكتبة المدينه بإبالمدينه كراجي	قرانِ پاک
دارالكتب العلميه بيروت	الترغيب والترهيب	دارالكتبالعلميه بيروت	بخاری
دارالفكر بيروت	ابن عساكر	دارابن حزم بیروت	مىلم
انتشارات گنجيية تهران	كيميائے سعادت	داراحیاءالتراث العربی بیروت	ابوداور
موئسة الريان بيروت	القول البديع	دارالفكر بيروت	ترندی
دارالكتبالعلميه بيروت	كتاب التوابين	دارالمعرفه بيروت	ا بن ماجبہ
دارالكتبالعلميه بيروت	روض الرياحين	طشقند از بكستان	الادبالمفرد
ضياءالقرآن مركز الاولىياءلا هور	مراة	دارالفكر بيروت	مسندامام احمد
رضا فاونڈیشن مرکز الاولیاءلا ہور	فآویٰ رضوبیہ	دارالكتبالعلميه بيروت	معجم اوسط
مكتبة المدينه باب المدينه كراچي	بهارشربیت	دارالمعرفه بيروت	متدرك

सुब्बत की बहारे 🎏

तब्लीगे करआनो सुन्तत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में व कसरत सुनतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जमा'रात इशा की नमाज के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सन्नतों भरे इन्तिमाअ में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिकाने रसल के म-दनी काफिलों में ब निय्यते सवाब सन्ततों की तरबिय्यत के लिये सफर और रोजाना फिक्रे मदीना के जरीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा"मल बना लीजिये, اللَّهُ وَلَهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّا لِمُؤْمِلُ وَاللَّهُ وَاللَّالَّا لَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّا لَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَّا لَا اللَّهُ وَلَّا لَا اللَّهُ وَلَّا لَا اللَّ की हिफाज़त के लिये कुढ़ने का जेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह जेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। الله والله الله عنه الله والله की इस्लाह की कोशिश करनी है। إذا الله والله إلله عنه الله على الله عنه عنه الله عنه الله عنه الله عنه الله عنه الله عنه عنه الله عنه عنه الله عنه الله عنه الله عنه عنه الله عنه الله عنه الله عنه ا इन्आमात" पर अगल और सारी दन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी काफिलों" में सफर करना है। ५४% है। 215 है।









🐗 🎒 सक-त-पत्रत सन्त्रीबा की शास्त्री 🍪 🖘

मम्बर्ड : 19, 20, महम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मम्बर्ड फोन : 022-23454429

रेहली : 421, मटिया महल, ठर्द बाजार, जामेअ मस्जिद, देहली फोन : 011-23284560

चागपुर : गरीब नवाज मस्जिद के सामने, सैन्द्री नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर : (M) 09373110621

अजमेर ज़रीफ : 19/216 फलाहे दारैन मस्जिद, नाला बाजार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुगल पुरा, हैदरआबाद परेन : 040-24572786

हुस्ती : A.J. मुदोल कोग्पलेश, A.J. मुदोल रोड, ओल्ड हुस्ती बीज के पार, हुस्ती, कर्नाटक, फोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीबा

फैजाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के सामने, मिरजापर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया Mo.091 93271 68200 E-mail: maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net